Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

रामनगर (मण्डला) का स्थापत्य (गोंड राजवंश के संदर्भ में)

महेन्द्र सिंह उइके*

* शोधार्थी (इतिहास) एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – रामनगर, मण्डला जिले का एक कस्बा है। यह मण्डला जिले से 20 किलोमीटर दूर नर्मदा नदी के तट पर स्थित है। नर्मदा नदी के दक्षिणी किनारे पर रामनगर रैयतबाडी में किले का निर्माण राजा हृदयशाह ने करवाया था। यह नगर गढ़ा–मण्डला के गोंडवंश की राजधानी बना। गोंड राजाओं के साथ बुन्देला वैमनस्य तथा दिल्ली दरबार की उपेक्षा का परिणाम था कि रामनगर नई राजधानी के रूप में विकसित हुआ। रामनगर को राजा हृदयशाह/हिरदैसाहि ने राजधानी बनाया। रामनगर में अलग अलग किले निर्मित किये गये जो समूह के रूप में है। जिसमें मोतीमहल, (राजमहल) रामभगत की कोठी, विष्णु मंदिर, बेगन महल, चौगान, दल बादल महल चौगान आदि है।

मार्ग– यह नगर मण्डला मुख्यालय से 28 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। रामनगर सड़क मार्ग द्वारा बस या निजी वाहन से पहुंचा जा सकता है।

इस स्थान पर गोंड नरेश हृदयशाह द्वारा निर्मित सुन्दर एवं भव्य महल है जो गोंड राजाओं की सर्वोत्तम कृति है। इसी महल में एक शिलालेख है जो राजा हृदयशाह ने अंकित कराया था, जिसे रामनगर शिलालेख कहा जाता है। इस शिलालेख में गोंड राजवंश की वंशावली लिखी गयी है जो इस वंश के आदि पुरूष यादवराय से प्रारम्भ एवं हृदयशाह पर समाप्त होती है।

भौगोलिक स्थिति – 'रामनगर की भौगोलिक स्थिति 22.59^0 उत्तरी अक्षांश तथा 80.37^0 पूर्वी देशान्तर है।'[1]

प्राकृतिक दृष्टि से रामनगर, सुरम्य वातावरण से युक्त स्थान है। इस नगर के आसपास सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला की पहाड़ियां हैं जो सघन वन से युक्त हैं। रामनगर को गोंड नरेश हृदयशाह ने अपनी राजधानी बनाया।

गढ़ा के शासकों की प्रथम राजधानी गढ़ा (जबलपुर) थी। इसी कारण गोंडवंश का गढ़ा का गोंड वंश या गढ़ा राज्य भी कहा जाता है। गढ़ा के साथ गढ़ा–कटंगा, गढ़ा–मण्डला का नाम भी जोड़ा जाता है।

गढ़ा के पश्चात् राजा दलपतिशाह के शासनकाल में राजनीतिक राजधानी का दर्जा सिंगोरगढ़ को प्राप्त हुआ। हालांकि गढ़ा को कभी विस्मृत नहीं किया गया। दलपतिशाह की असमय मृत्यु के पश्चात् राजा दलपतिशाह के अल्प वयस्क पुत्र वीरनारायण को गढ़ा–मण्डला राज्य का राजा घोषित किया गया।

'दलपतिशाह की मृत्यु के समय 'वीरनारायण की आयु 5 वर्ष की थी।'[2] कतिपय विद्वान कुंवर वीरनारायण की आयु के विषय में पृथक मत रखते हैं। रामभरोस अग्रवाल की पुस्तक 'गढ़ा–मण्डला के गोंड राजा' में 'दलपतिशाह की मृत्यु के समय वीरनारायण की आयु 3 वर्ष उल्लेखित है।'[3] वीरनारायण की माता रानी दुर्गावती ने अपने अल्प वयस्क पुत्र की संरक्षिका बन कर शासन किया। राज्य एवं राजधानी गढ़ा ही थी परन्तु राजा हृदयशाह सिंगौरगढ़ में रहना पसन्द करते थे। अत: राजनीतिक रूप से राजधानी का दर्जा सिंगौरगढ़ को प्राप्त था। इस समय गोंड राजाओं का प्रमुख राजकोष सतपुड़ा की पहाड़ियों में स्थित एवं सुरक्षित स्थाना चौरागढ़ दुर्ग में रहता था।

राजा प्रेमनारायण/प्रेमशाह के शासनकाल में मुख्यालय चौरागढ़ रहा। राजा प्रेमनारायण की हत्या बुन्देला शासक जुझार सिंह ने कर दी। प्रेमनारायण के पुत्र राजा हृदयशाह के समय भी मुख्यालय चौरागढ़ दुर्ग ही था।

मुगल शासक शाहजहां के काल मे ओरछा के शासक पहाड़सिंह ने चौरागढ़ पर आक्रमण किया, शाहजहां द्वारा चौरागढ़ का जागीरदार पहाड़सिंह को बनाया गया था। राजा हृदयशाह को चौरागढ़ छोड़ना पड़ा। इस राजा हृदयशाह ने रामगढ़ को राजधानी बनाने का निर्णय लिया और रामनगर में नयी राजधानी के भवनों का निर्माण कराया। 'रामनगर में सन् 1652 में राजधानी स्थापित हुयी। रामनगर में जो शिलालेख हैं वह शिलालेख सन् 1667 ई. का है।'[4]

शिलालेख लिखे जाने के समय तक रामनगर के दुर्ग सदृष महल के समस्त भवन निर्मित हो चुके थे। बाद में निर्माण कार्य होते रहे होंगे ऐसा कहा जा सकता है।

रामनगर का राजा का महल जो मोती महल के नाम से प्रसिद्ध है। रामनगर के प्रमुख स्मारकों में मोतीमहल, रानी महल, बादल महल, रायभगत की कोठी एवं विष्णु मन्दिर हैं। सभी स्मारक मिश्रित शैली में निर्मित हैं। विशेष रूप से निवास स्थानों में मुस्लिम कालीन (ईरानियन) कला शैली का विशेष प्रभाव दिखलाई देता है। मोती महल यह महल नर्मदा के तट पर स्थित है। यह महल उत्तर दिशा की तरफ सामना है यह महल चौकौन बनाया गया है 212 फीट लम्बा एवं 200 फीट चौडा है। इस महल मे केन्दीय खूला आंगन है। जो 167 फीट ग 156 फीट लम्बा चौडा है। जिसके मध्य में एक पानी का कुण्ड है। यह किला तीन मंजिला बनवाया गया है जो कि सकरी सीढियों के रास्ते से जुडा है। महल में शाही शयन कक्ष बडे बडे दरबार कक्ष, नृत्य कक्ष, शाही रसोई कक्ष, नर्मदा की ओर मुख बाले अनेकों बरामदें, छत, है। मोतीमहल में तहखाने भी है जो सुरंग के माध्यम से जुडे है। बर्षा के पानी के बहाव के लिये भी पर्याप्त व्यवस्था की गई है। मोती महल पत्थरों से बनाया गया एक वास्तुकला की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण महल है। जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में माना जाता है।

रामनगर सबसे प्रसिद्ध एवं विशाल स्मारक है। इस महल को दुर्ग का स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया गया है। इस स्मारक के उत्तार में नर्मदा नदी प्रवाहमान है। इसी तरफ इस महल का प्रमुख द्वार था। महल की अन्य दिशाओं में भी कई और द्वार रहे होंगे।

मोतीमहल का आकार आयताकार है। इस महल के मध्य में एक विशाल प्रांगण है। प्रांगण के मध्य एक विशाल जलकुण्ड है। यह स्मारक तीन मन्जिला है। इस महल निर्माण शैली में मेहराब तथा गुम्बद का प्रयोग किया गया है। यह शैली मुगलशैली कहलाती है। वस्तुत: यह निर्माण शैली ईरानी शैली है। मोतीमहल के प्रांगण के चारों ओर कक्ष निर्मित हैं। ये कक्ष भी आयताकार हैं अर्थात् लम्बाई में अधिक तथा चौड़ाई में कम। इन कक्षों के सम्मुख बरामदे हैं जो इस महल की भव्यता बढ़ा देते हैं। अधिकतर निर्माण सादा हैं फिर भी अलंकरण मिल जाता है। समस्त भवनों कक्षों पर चूने का प्लास्टर किया गया है। मोतीमहल के सबसे ऊपर के भाग के कोण कक्षों पर गुम्बद निर्मित किये गये हैं।

स्नानागार – मोतीमहल के प्रांगण में एक विशाल स्नानागार है। जिसे कुण्ड भी कहा जाता है। यह जलकुण्ड दो तल में विभक्त है। ऊपरी तल की लम्बाई 95.54 फुट तथा चौड़ाई 83.64 फुट है। यह तल 4.26 फुट गहरा है। यह कुण्ड भी मोतीमहल की तरह आयताकार है। पूर्व से पश्चिम दिशा की लम्बाई 95.54 फुट तथा उत्तार से दक्षिण दिशा में चौड़ाई 83.64 फुट है।

कुण्ड का निचला तल – पूर्व से पश्चिम दिशा में 76.19 फुट लम्बा तथा 48.34 फुट चौंड़ा है। इसकी गहराई 3.93 फुट है।

भागवतराय (रायभगत) की कोठी – रामनगर के स्मारकों में रायभगत की कोठी एक प्रमुख स्मारक है। यह स्मारक मोतीमहल से लगभग 250 मीटर की दूरी पर स्थित है। यह स्मारक एक ऊँचे प्लेटफार्म पर स्थित है। यह प्रवेश द्वार दो मन्जिला है। प्रवेशद्वार में सफेद पत्थर का प्रयोग किया गया है। प्रवेश की पहली मन्जिल पर द्वार एवं गवाक्षयुक्त कक्ष हैं। उसके ऊपर मुण्डेर युक्त छत है। इस किलो को हृदयशाह के कार्यकाल में निर्मित किया गया था जो कि उनके दीवान रामभगत के लिये ही बनाई गई थी। यह मोतीमहल से 500 मीटर दूर है, इसे मंत्री महल भी कहा जाता है। यह भवन दक्षिण दिशा की ओर सामना है। भवन के मुख्य द्वार पर उँची चादर की बाडी बनाई गई है। यह महल अधिक व्यवस्थित तरीके से बनाया गया है। इसके चारों कोनों पर गुम्बद है। बीच में आंगन है। महल में कलाकृत चित्रित छत है। सभी कक्ष बडे, व आंगन से जुडे है। यह स्मारक भी 1984 से राज्य संरक्षित स्मारक से जुडा है।

रायभगत की कोठी अन्दर से मोती महल जैसा भवन है। यह भवन चौकोर है। तीन मन्जिला भवन के बीच में चौकोर प्रांगण हैं, प्रांगण के मध्य वर्गाकार जलकुण्ड है जिसमें वर्तमान समय में कमल पुष्प पल्लिवित हैं। आंगन के चारों ओर बरामदे हैं तथा बरामदों के पीछे वर्गाकार कक्ष निर्मित किये गये थे। कोठी के चारों ओर के कोणों पर चार गुम्बद निर्मित हैं जो कि मध्यकालीन स्थापत्य कला का सुन्दर उदाहरण है।

'भागवतराय का यह भवन गोंड नरेश हृदयशाह द्वारा निर्मित कराया गया था। भागवत राय राजा हृदयशाह के दरबार का मन्त्री था।'

दल बादल महल –भगवत राय की कोठी से कुछ दूरी पर दल-बादल नाम का एक स्मारक है। यह स्मारक भी राजा हृदयशाह के शासनकाल में निर्मित हुआ इसे हवामहल भी कहा जाता है। यह स्मारक वर्गाकार है। स्मारक के चारों ओर गजपृष्ठाकार मेहराबें दिखलाई देती हैं। यह महल भी तीन मन्जिला भवन है जिसमें सौन्दर्य का आनन्द लेने हेतु निर्मित किया गया होगा।

रानीमहल रामनगर – राजाहृदयशाह के शासनकाल में निर्मित यह भवन रानीमहल और बेगम महल भी कहा जाता है। बेगम महल मोती महल से लगभग 2-5 किलोमीटर दूर उत्तर पूर्व दिशा में स्थित है। राजा हृदयशाह द्वारा चिमनी रानी (जो राजा हृदयशाह की दूसरी पत्नि) के नाम से बनाया गया है। चिमनी रानी मुगल परिवार से थी यह महल भी तीन मंजिल का मुगल शैली का प्रभाव वाला महल है। महल में उपर की ओर गुम्बद बनाये गय है। यह महल उत्तर पश्चिम सामना वाला महल है। महल में पानी का कुण्ड भी बनाया गया है। यह भवन सुन्दर एवं रमणीय स्थान पर निर्मित है। यह भवन कहीं-कहीं तीन मन्जिला और कहीं चार मन्जिला है। यह महल अनेक कक्षों से युक्त एक आयताकार भवन है। जिसके चारों कोणों पर गुम्बद निर्मित किये गये हैं। इस भवन को एक ऊँची जगती पर निर्मित किया गया है। महल अब भी दृढ़ स्थिति में है।

इस स्मारक में मुगल स्थापत्य कला का आधिपत्य है। इस स्मारक में एक सुन्दर बावड़ी है जिसमें अब भी वर्ष भर पानी रहता है।

विष्णु मन्दिर – राजा हृदयशाह के शासनकाल में रामनगर में एक विष्णु मन्दिर का निर्माण उनकी पत्नी सुन्दरी देवी ने कराया था। यह मन्दिर मोतीमहल के पास ही है। इस मन्दिर का निर्माण मध्यकालीन स्थापत्य शैली में पंचायतन शैली के अन्तर्गत किया गया है। यह मंदिर मोतीमहल से 30 किलोमीटर दूर है। महल दक्षिण-पश्चिम दिशा में बना है। चौकोन निर्माण है। महल के अंदर भी चौकोन कक्ष है। जिसपर गुम्बद बनाये गये है। चारों कौनों में छोटे-छोटे गुम्बद बनाये गये है। चारों तरफ खुला बरामदा है। इस मंदिर में विष्णु जी की मूर्ति के अलावा, शिव, गणेश, सूर्य एवं दुर्गा जी भी विराजमान है। यह मंदिर भी 1984 में राज्य संरक्षित स्मारक घोषित किया गया है।

मन्दिर के चार कोणों पर चार कक्ष हैं और उन कक्षों पर गुम्बद निर्मित हैं। इसमें प्रमुख देव श्री हरि विष्णु हैं मन्दिर उन्हीं को समर्पित था। इसके अतिरिक्त भगवान विष्णु के इस मन्दिर में भगवान शिव, गणेश, सूर्य एवं एक देवी की प्रतिमा थी। वर्तमान समय में मन्दिर प्रतिमाओं से रिक्त है। इस मन्दिर की अधिकांश प्रतिमायें जिला संग्रहालय मण्डला में संरक्षित हैं।

रामनगर किला

रामनगर किला में स्थित शिलालेख

रामनगर किला (राजधानी)

मोतीमहल प्रांगण में स्नानागार

राम भगवत राय की कोठी

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. गूगल नेट से साभार।
2. सिंह, डॉ. रामसिया, पृष्ठ 92
3. अग्रवाल, रामभरोस- गढ़ा मण्डला के गोंड राजा, गोंडी पब्लिक ट्रस्ट, मण्डला विक्रम सम्बत- 2068, पृष्ठ 48
4. सिंह, डॉ. रामसिया, पृष्ठ- 151
5. सिंह, डॉ. रामसिया पूर्वोक्त पृष्ठ -151
6. छायाचित्र शोधार्थी द्वारा स्वयं संकलित।

****